बंगला खूब बना महाराज .....

बंगला खूब बना महाराज, जिसमें नारायण बोले ।
इस बंगले के दस दरवाजे, बीच पवन का खम्भा ।
आवत जावक कछू न दीखे, ये ही बड़ा अचम्भा ।।
पाँच गुणों की ईंट बनाई, तीन तत्व का गारा ।
राम नाम की छात छवाई, चेतन है चेजारा ।।
इस बंगले की चार बुरूज हैं, बेहतर बना कंगूरा ।
तीन सौ साठ चुणापण लाग्या, जब ये हुआ चौफेरा ।।
इस बंगला में सुरता नाचे, मनवा ताल बजावे ।
सुरत निरत का बज रहा बाजा, राग छतीसों गावे ।।
इस नयना नारायण देखे, सुरत राम से लागे ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, दिल की दुविधा भागे ।।

बड़ी देर भई नंदलाला .....

बड़ी देर भई नंदलाला, तेरी राह तके ब्रजबाला ।
ग्वाल बाल एक–एक से पूछे, कहाँ है मुरलीवाला रे ।। टेर ।।
कोई न जाए कुंज गलिन में, तुझ बिना कलियाँ चुनने को ।
तरस रहे हैं जमुना के तट, धुन मुरली की सुनने को ।
अब तो दरस दिखा दे नटवर, क्यों दुविधा में डाला रे ।। 1 ।।
संकट में है आज वो धरती, जिस पर तूने जन्म लिया ।
पूरा कर दे आज वचन वो, गीता में जो तूने दिया ।
कोई नहीं है तुझ बिन मोहन, भारत का रखवाला रे ।। 2 ।।